Publication Date 01.06.2024
Postal Registration No. G/CHD/0096/2024-26
Registrar of Newspapers of India
Regd. No. 46809/70 I Total Pages 20
Posted at MBU Chandigarh 1st of Every Month

हरियाणा सहकारी प्रकाश

Haryana Sahkari Parkash

वर्ष : 55 | अंक 06 | 01 जून, 2024 | वार्षिक मूल्य : 500/- | प्रति कापी : 50/-

जय जवान जय किसान

HARCOFED
Bays No. 49-52, Sector - 2, Panchkula
https://www.harcofed.org.in
harcofed@ymail.com

सम्पादकिय

देश का अन्नदाता :- किसान

हमारे देश में किसान का महत्व एक सवेंदशील विषय है, जिसे गंभीरता से संभालने की ज़रूरत है। किसान भारतीय समाज की रीढ़ की हड्डी है क्योंकि किसान अपने परिवार व खुद को भूखा रखकर पूरे देश का पेट भरते हैं अर्थात किसान देश का अन्नदाता है। आज भारत के लोग विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में लगे हुए हैं, लेकिन कृषि भारत का मुख्य व्यवसाय है। 1970 के दशक से पहले भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं था और खाद्यान्न लाभ का एक बड़ा हिस्सा दूसरे देशों से आयात करना पड़ता था। परन्तु जब हमारे आयात ने हमें ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया तो उस समय के प्रधानमंत्री एवं भारत के महान नेता श्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने एक विकल्प खोजा और हमारे किसानों को प्रेरित किया। **'जय जवान जय किसान'** का नारा इन्ही द्वारा दिया गया था। तत्पश्चात् भारत में 'हरित क्रान्ति' की शुरूआत हुई और हम खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर हो गए। किसान अर्थव्यवसथा की प्रेरक शक्ति भी है इसलिए हमारी आबादी का एक बड़ा हिस्सा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस में शामिल है। किसानों का भारतीय अर्थव्यवस्था में लगभग 17 प्रतिशत का योगदान होता है जो सब चीजों से अतिरिक्त सबसे ज्यादा है लेकिन निराशाजनक बात यह है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में किसानों का इतना ज्यादा योगदान होने के बावजूद एक किसान समाज की हर सुख–सुविधा से वंचित है। आज भी बहुत बड़ी सख्या में भारतीय किसानों के पास खुद का घर नहीं है और उनकी हालत अब भी संतोषजनक नहीं है। हालांकि किसान हर फसल पर अपनी पूरी मेहनत करते हैं लेकिन दुर्भाग्य से कई बार उनकी फसल में कभी रोग लग जाता है या तेज बारीश एवं ओलावृष्टि के कारण उनकी साल भर की मेहनत बर्बाद हो जाती है। केन्द्र और राज्य सरकार की अनेक योजनाएं किसानों के हित में चल रही है जिनकी जानकारी भी उनको नहीं हो पाती। समस्या यह भी है कि उन्हें प्रयाप्त साधन के साथ–साथ प्रयाप्त भुगतान भी नहीं किया जा रहा। बहुत ऐसे कारणों को देखते हुए हमारे समाज में किसानों की वर्तमान स्थिति में सुधार की जरूरत है। इसलिए हमारे देश में किसान के समृद्ध भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए हम सभी को उनको समर्थन करना चाहिए। जो किसान अनेको ऋण एवं संघर्षों से घिरे रहने के बावजूद भी कभी खेती करना नही छोड़ते और पूर्ण समाज का पेट भरने के लिए कभी आराम नही करते, हमें देश के एक जिम्मेदार नागरीक के रूप में ऐसे किसान भाईयों के लिए आगे आना चाहिए क्योंकि हम उनके बिना एक दिन भी अपने जीवन को जी नहीं सकते।

हरकोफैड की अपील है कि हमें किसान के महत्व को समझने की आवश्यकता है एवं उनके लिए ठोस कदम उठाने की जरूरत है। किसानों के बगैर हमारे जीवन की कल्पना करना असम्भव है इसलिए उनके साथ हमें देश की सेना जैसा सम्मानजनक व्यवहार करना चाहिए।

हरियाणा सहकारी प्रकाश

मुख्य संरक्षक
डॉ. राजा सेखर वुंदरू, भा.प्र.से.
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
सहकारिता विभाग, हरियाणा

संरक्षक
राजेश जोगपाल, भा.प्र.से.
रजिस्ट्रार सहकारी समितियां,
हरियाणा

मुख्य सम्पादक
सुमन बल्हारा
प्रबन्ध निदेशक, हरकोफैड

सम्पादक
सौरव शर्मा

सुविचार

आप मानवता में विश्वास मत खोये। मानवता समुद्र की तरह है अगर समुद्र की कुछ बूंदें गंदी है तो इससे समुद्र गंदा नहीं हो जाता।

— महात्मा गांधी

'हरियाणा सहकारी प्रकाश' में प्रकाशित लेखकों के विचारों के साथ हरकोफैड का सहमत होना आवश्यक नहीं है। यह लेखकों के अपने विचार हैं।

हरियाणा सहकारी प्रकाश की विज्ञापन दरें :–

क्र.सं.	विवरण प्रति प्रकाशन	रुपये
1.	पूरा पृष्ठ टाईटल रंगीन	14000/–
2.	पूरा पृष्ठ रंगीन	9000/–
3.	पूरा पृष्ठ श्याम–श्वेत	6000/–
4.	आधा पृष्ठ श्याम–श्वेत	4000/–

इस अंक में पढ़िए

ग्रामीण किसानों के लिए ड्रोन प्रशिक्षण	4-5
विकसित भारत के लक्ष्य का मार्ग है- स्वदेशी	6
हरियाणवी गीत	7
बाजरा एक पोषक अनाज की फसल	8-9
श्री जे.सी. कंवर अतिरिक्त रजिस्ट्रार (सेवानिवृत) का निधन	9
COOPERATIVES HELP FARMERS	10-12
भीषण गर्मी के लिए हम कितने तैयार ?	12-13
विश्व दुग्ध दिवस	14-15
धान	16-17
दिलचस्प कहानी	18
विज्ञापन	19

E-MAIL
harcofed@ymail.com
harcopress@gmail.com

Website
https://www.harcofed.org.in

ग्रामीण किसानों के लिए ड्रोन प्रशिक्षण : कृषि के भविष्य की ओर एक कदम

हाल के वर्षों में ड्रोन कृषि क्षेत्र में एक गैम–चेंजिंग तकनीक के रूप में उभरे है, जो किसानों को नए उपकरण प्रदान करते हैं जो उन्हें अपना उत्पादन बढ़ाने अपनी दक्षता में सुधार करने और अपने खर्चों को कम करने में सक्षम बनाते हैं। हालांकि, ड्रोन प्रौद्योगिकी के सफल उपयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए, केवल ड्रोन तक पहुंच पर्याप्त नहीं है। उनका कुशल उपयोग करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल भी होना चाहिए। यह ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जहां अधिकांश आबादी का मुख्य व्यवसाय कृषि है। कृषि में ड्रोन प्रौद्योगिकी द्वारा प्रस्तुत संभावनाओं का अधिकतम लाभ उठाने के लिए ग्रामीण किसानों को आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस करने के साधन के रूप में, इन किसानों को सशक्त बनाने की प्रक्रिया में ड्रोन प्रशिक्षण एक आवश्यक घटक है।

फसलों की उन्नत निगरानी और क्षेत्र की स्थितियों का मूल्यांकन : फसलों की निगरानी करने और क्षेत्र की स्थितियों का मूल्यांकन करने की क्षमता उन प्रमुख तरीकों में से एक है जिससे ड्रोन प्रशिक्षण ग्रामीण किसानों को सशक्त बनाता है। यह प्राथमिक तरीकों में से एक है जिससे ड्रोन प्रशिक्षण संक्रमण और अन्य महत्वपूर्ण तत्वों पर वास्तविक समय डेटा प्रदान करने की ड्रोन की क्षमता ड्रोन पर कैमरों और सेंसर की उपस्थिति से संभव हो जाती है। यदि किसान ड्रोन संचालित करने के लिए आवश्यक कौशल हासिल कर लेते है और फिर एकत्र किए गए डेटा को समझते हैं तो वे सिंचाई, उर्वरक और कीट नियंत्रण के संबंध में अधिक शिक्षित निर्णय लेने में सक्षम होते है। इसके कारण, कृषि उपज बढ़ती है, और इनपुट लागत कम होती है, जिससे अंततः लाभप्रदता में वृद्धि होती है।

परिशुद्धता में विशेषज्ञता वाली कृषि विधियों का उपयोग : इसके अतिरिक्त, ड्रोन का प्रशिक्षण ग्रामीण किसानों को सटीक कृषि पद्धतियों को लागू करने की क्षमता देता है, जो बदले में उन्हें सशक्त बनाता है। कृषि के क्षेत्र में, सटीक कृषि का तात्पर्य प्रत्येक व्यक्तिगत स्थान की विशेष आवश्यकताओं के अनुसार पान, उर्वरक और कीटनाशकों जैसे इनपुट को अनुकूलित करने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग से है। ड्रोन के कारण सटीक उच्च–रिजॉल्यूशन वाली तस्वीरें प्रदान करने में सक्षम है। ये छवियां किसानों को यह अलग उपचार की आवश्यकता है। यदि किसान अपने खेतों में सटीक कृषि के लिए ड्रोन का उपयोग करना सीख जाते हैं तो उनके पास उपशिष्ट को काटने, दक्षता में सुधार करने और पर्यावरण पर उनके प्रभाव को कम करने की क्षमता होती है।

पैसा कमाने के नए अवसरों का विकास : इसके अलावा, ड्रोन का प्रशिक्षण ग्रामीण किसानों को पैसे कमाने के अतिरिक्त विकल्प प्रदान करके अधिक शक्ति अपने समुदाय के अन्य किसानों को ड्रोन सेवाएं प्रदान करना संभव है। इन सेवाओं में हवाई मानचित्रण, फसल स्काउटिंग या कृषि ड्रोन का उपयोग करके छिड़काव सेवाएं शामिल हो सकती हैं। यदि किसान इस तरीके से अपनी आय धाराओं में विविधता लाते हैं तो वे अपनी समग्र आजीविका में सुधार कर सकते हैं और आर्थिक परिवर्तनों के प्रभावों के प्रति अपनी प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत कर सकते है। केवल व्यक्तिगत रूप से ही किसान इससे लाभान्वित नहीं होते हैं। ग्रामीण समुदायों को भी इससे लाभ होता है क्योंकि इससे उनकी अर्थव्यवस्था बनाने में मदद मिलती है।

ड्रोन के लिए प्रशिक्षण भी नवाचार और उद्यमशीलता को प्रोत्साहित और सुविधाजनक बनाकर ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों को सशक्त बना सकता है। यदि किसान ड्रोन प्रौद्योगिकी और कृषि में इसके अनुप्रयोगों के बारे में खुद को शिक्षित करते हैं तो वे अपने सामने आने वाली कठिनाइयों का सामना करने के लिए नवीन विचारों और समाधानों के साथ आने में सक्षम होते हैं। केवल एक उदाहरण देने के लिए, वे फसल निगरानी के लिए नवीन तरीकों के साथ आ सकते हैं या नए उत्पादों या सेवाओं के साथ आ सकते हैं जो ड्रोन तकनीक पर आधारित हैं। इससे न केवल किसानों को लाभ होता है, बल्कि यह नए व्यावसायिक अवसर पैदा करके और आर्थिक विकास को बढ़ावा देकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था के व्यापक विकास में भी योगदान देता है।

हरियाणा सरकार की पहल : कृषि क्षेत्र को आधुनिक बनाने और किसानों की आजीविका बढ़ाने की दिशा में यह एक उल्लेखनीय कदम है कि हरियाणा सरकार ने किसानों को कृषि उद्देश्यों के लिए ड्रोन का उपयोग सिखाने का प्रयास किया है। किसानों को सुरक्षित और कुशल तरीके ड्रोन संचालित करने के लिए आवश्यक ज्ञान और क्षमताएं

आदित्य, अरूलमणिकंदन बा एवं पी.एस. सहरावत, कृषि विस्तार शिक्षा विभाग चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

प्रदान करने के लिए सरकार रिमोट पायलट ट्रेनिंग ऑर्गनाइजेशन (आरपीटीओ) के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान कर रही हे। यह उन किसानों को प्रशिक्षित करने पर ध्यान केंद्रित करने का एक रणनीतिक कदम है जो किसान–उत्पादक संगठनों (एफपीओ) या कस्टम हायरिंग सेंटर (सीएचसी) के सदस्य हैं, क्योंकि यह दृष्टिकोण उन किसानों को लक्षित करता है जिन्हें ड्रोन तकनीक से लाभ होने की सबसे अधिक संभावना है।

दृश्य संगठन की स्थापना : यह सही दिशा में एक कदम है कि हरियाणा लिमिटेड की ड्रोन इमेजिंग और सूचना सेवा (दृश्य) को विशेष रूप से ड्रोन के लिए एक प्रशिक्षण निकाय के रूप में स्थापित किया गया है। यह कृषि सेटिंग्स में ड्रोन प्रौद्योगिकी के कार्यान्वयन में सहायता करने के लिए राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। सरकार यह सुनिश्चित करती है कि किसानों को दृश्य के माध्यम से प्रशिक्षण देकर ड्रोन का उपयोग करने के बारे में उच्च गुणवत्ता वाले निर्देश और सहायता प्राप्त हो। इससे किसान अपनी पूरी क्षमता से ड्रोन का उपयोग कर सकते हैं और प्रौद्योगिकी से अधिकतम लाभ उठा सकते हैं। दृश्य ने कृषि सेंटिंग में ड्रोन के उपयोग से जुड़े कई अवधारणाओं के प्रमाण (पीओसी) को सफलतापूर्वक प्रस्तुत करके अपने विशेष ज्ञान का प्रदर्शन किया है। यूरिया और कीटनाशकों का छिड़काव करने के लिए ड्रोन का उपयोग करना पीओसी संचालन के सबसे उल्लेखनीय उदाहरणों में से एक है। इन डेमो का उद्देश्य किसानों को प्रोद्योगिकी की संभावनाओं के बारे में शिक्षित करना है, साथ ही कृषि में ड्रोन में व्यावहारिक अनुप्रयोगों को भी प्रदर्शित करना है। इसकी वजह से किसानों का आत्मविश्वास बढ़ता है, जो बदले में उन्हें अपनी खेती की तकनीकों में ड्रोन तकनीक का उपयोग करने के लिए प्रेरित करता है।

भारत सरकार द्वारा की गई पहल : भारत सरकार ने खेती में उपयोग के लिए लगभग एक सौ ड्रोन पायलटों को प्रशिक्षण देने के लिए भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान–मंडी (आईआईटी मंडी) को एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में पहचाना है। कृषि क्षेत्र में प्रौद्योगिकी लाने के लिए यह एक महत्वपूर्ण कदम उठाया जा रहा है। ड्रोन में कृषि पद्धतियों ओर दक्षता में सुधार करने की क्षमता है, और यह कार्यक्रम उस क्षमता का लाभ उठाने का इरादा रखता है। इस कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी में आईहब तीन महीने तक चलने वाले आवासीय प्रशिक्षण पाठयक्रम की पेशकश करने वाली पहली सरकारी सुविधा बन जाएगी और इसे ऐसे व्यक्तियों के लिए डिजाइन किया गया है जो कम से कम 18 वर्ष के हैं और दसवीं कक्षा की योग्यता रखते हैं। पीएम कौशल विकास योजना 4.0 के हिस्से के रूप में किए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत उम्मीदवारों को कृषि कीटनाशक छिड़काव, पौधों के स्वास्थ्य की निगरानी, क्षेत्र की स्थिति का आकलन, बुवाई और ड्रोन का उपयोग करके परागण में महत्वपूर्ण कौशल से लैस किया जाएगा।

कृषि में प्रयुक्त ड्रोन के लिए सब्सिडी कार्यक्रम : कृषि ड्रोन सब्सिडी योजना एक कार्यक्रम है जैसे सरकार द्वारा कृषि सेटिंग्स में ड्रोन के उपयोग को प्रोत्साहित करने के इरादे से स्थापित किया गया था। ड्रोन की खरीद और उपयोग के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करके, यह कार्यक्रम कृषि निगरानी और मूल्यांकन की प्रक्रिया में क्रांतिकारी बदलाव लाएगा। किसानों के लिए कृषि उद्देश्यों के लिए ड्रोन लाइसेंस प्राप्त करना संभव है, जो उन्हें फसल प्रबंधन में सुधार के लिए उन्नत मानव रहित हवाई वाहन प्रौद्योगिकी का उपयोग करने की अनुमति देगा।

निष्कर्ष : यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि ड्रोन के प्रशिक्षण में ग्रामीण क्षत्रों में किसानों को विभिन्न तरीकों से सशक्त बनाने की क्षमता है। ड्रोन प्रशिक्षण किसानों को फसल की पैदावार बढ़ाने, सटीक कृषि पद्धतियों को अपनाने, आय के नए अवसर पैदा करने और नवाचार और उद्यमिता को बढ़ावा देने में सहायता कर सकता है। यह उन्हें ड़ोन प्रौद्योगिकी का सफल उपयोग करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस करके पूरा किया जाता है। कृषि के लिए ड्रोन के उपयोग में किसानों को प्रशिक्षित करनके के लिए हरियाणा सरकार और भारत सरकार दोनों द्वारा किए गए प्रयास कृषि उद्योग के आधुनिकीकरण और किसानों की आजीविका में सुधार की दिशा में सराहनीय कदम हैं। सरकारें न केवल किसानों की शिक्षा और प्रौद्योगिकी को अपनाने में निवेश करके किसानों की शिक्षा और प्रौद्योगिकी को अपनाने में निवेश करके किसानों को सशक्त बना रही हैं, बल्कि वे कृषि उद्योग में नवाचार और सतत विकास को भी प्रोत्साहित कर रही हैं।

विकसित भारत के लक्ष्य का मार्ग है- स्वदेशी

-योगेश शर्मा, प्रबन्ध निदेशक, हाउसफैड
मो. 9467523666

दिसंबर 1903 में बंगाल के विभाजन के निर्णय से भारतीयों में असंतोष था। इसके उत्तर में घरेलू उत्पादन पर विश्वास करके व विदेशी वस्तुओं पर अंकुश लगाने के लिए 7 अगस्त 1905 को कलकत्ता से स्वदेशी आंदोलन आरंभ किया गया। स्वदेशी आंदोलन, आत्म निर्भरता हेतु आंदोलन था जो भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा था। इस आंदोलन ने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में योगदान दिया। महात्मा गांधी ने इसे स्वराज (स्व शासन) की आत्मा के रुप में वर्णित किया। संपन्न भारतीयों द्वारा खादी और ग्रामोद्योग समितियों को धन व भूमि दान करने के बाद आंदोलन ने विशाल आकार ले लिया तथा अनेक घरों में कपड़ा उत्पादन आरंभ हुआ। इसमें अनेक ग्राम उद्योग शामिल थे ताकि गांव आत्मनिर्भर बन सके। दादा भाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, महादेव रानाडे, बाल गंगाधर तिलक, गणेश जोशी ने स्वदेशी आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए संगठित होना शुरु किया। पंजाब में रामसिंह कूका ने अंग्रजी कपड़ों का बहिष्कार किया व हाथ से बुने कपड़े 'खद्‌र' को बढ़ावा दिया। महात्मा गांधी ने 31 जुलाई 1921 को मुंबई के परेल में अंग्रजी कपड़ों को जलाकर विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का संकल्प लिया। गांधी जी ने पूरे देश में खादी कताई केंद्रों का आयोजन किया। भारतीयों ने ब्रिटिश सामान को छोड़कर भारतीय उत्पादों को अपनाना शुरु किया। बाल गंगाधर तिलक ने मिट्टी से लेकर मिठाई तक स्वदेशी उत्पादों के उपयोग और खपत को लोकप्रिय बनाने के लिए गणेश उत्सव का नेतृत्व किया। स्वदेशी हथकरघा और खादी उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए भारत में पहला वार्षिक राष्ट्रीय हथकरघा दिवस 7 अगस्त 2015 को मनाया गया। यह तिथि इसलिए चुनी गई क्योंकि 7 अगस्त 1905 को विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार व भारतीय निर्मित उत्पादों का उपयोग करने के लिए स्वदेशी आंदोलन की घोषणा की गई थी।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट है कि विकसित भारत के निर्माण हेतु आत्मनिर्भर भारत आवश्यक है। आत्मनिर्भर होने के लिए अपनी उत्पादन क्षमता बढ़ानी होगी। हमारी खरीदारी में स्वदेशी उत्पाद प्राथमिक होने चाहिए। इसके लिए भारतीय नागरिकों को आर्थिक राष्ट्रभक्त होना होगा।

भारत के उत्पादन पर बहुराष्ट्रीय/विदेशी कंपनियों का कब्जा बढ़ता जा रहा है। हमारा ही कच्चा माल लेकर यहीं उसे फिनिशिंग देकर विदेशी कंपनियां लाभांश बाहर लेकर जा रही हैं।

आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक है कि हम आयात कम करें व निर्यात ज्यादा करें। विदेश व्यापार में घाटा होने के कारण रुपये की कीमत गिरती है। अनेक विदेशी कंपनियों के उत्पादों के समकक्ष भारतीय उत्पाद भी उपलब्ध हैं। परंतु उनकी मांग अपेक्षाकृत कम है।

भारतीय ग्राहकों द्वारा स्वदेशी उत्पाद खरीदने से भारत सरकार को हजारों मिलियन डॉलर के विदेशी मुद्रा भंडार को बचाने में सहायता मिलती है व इससे भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा। भारतीय उत्पादों के समर्थन से आयात घटेगा व भारत में ही रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। स्वदेशी के माध्यम से ही राष्ट्र संपन्न, आत्मनिर्भर व विकसित होगा।

हरियाणवी गीत

शीर्षक: आजा तनै दिखादयूंगा प्रदेश मेरा हरियाणा
उप शीर्षक: 22 जिले हरियाणा के (हरियाणा भ्रमण)
विशेष जानकारी : यह गीत youtube पर
Saurav Sharma Ki Ragni Channel पर
“Pardesh Mera Haryana” से आप सुन सकते है।

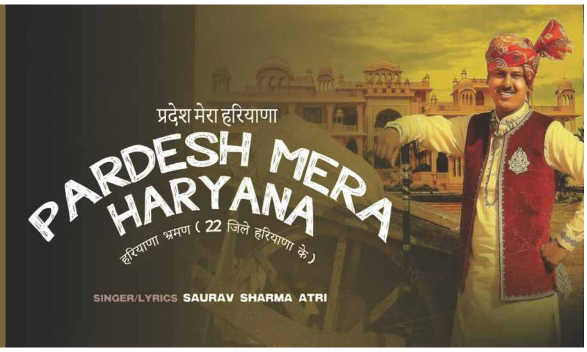

स्थाई: **सारा भारत घूम लिया ना, पाया इसा ठिकाणा,**
आजा तनै दिखादयूंगा, प्रदेश मेरा हरियाणा ।।

अंतरा–1
22 जिले हरियाणा के मैं, जिनमैं छाई नई बहार,
चण्डीगढ़ है राज़धानी, जाणै सै सारा संसार,
विधान सभा और सेक्रिटेरियेट तै, चालै सै दोहरी सरकार,
सुखना झील और रॉक गार्डन का, दुनिया देखै चमत्कार,
पंचकुला माँ मनसा देवी, माता की होरी जयकार,
मोरनी, पिंजौर बाग, नाडा साहिब गुरू का द्वार,
शहरीकरण का देख नज़ारा, रामगढ़ का किला पुराणा ।।

अंतरा–2
आगै चाल हरियाणा के, जिलों का बखान देख,
अम्बाला की छावनी मैं, देश के जवान देख,
यमुनानगर मैं यमुना बहती, कपालमोचन स्नान देख,
कुरूक्षेत्र का ब्रहमसरोवर, गीता का तू ज्ञान देख,
कपिलमुनि पिण्डारा तीर्थ, **जींद कैथल** आण देख,
पुण्डरी मैं घेवर–फिरनी का, बढ़िया खान–पान देख,
सूर्यग्रहण के मेले पै आड़ै, लाखों का आणा जाणा ।।

अंतरा–3
कर्ण का **करनाल** पार्क, चक्रवर्ती झील प्यारी,
पानीपत खद्दर की खड्डी, चीनी आली मील भारी,
खाद फैक्टरी थर्मल प्लांट, बिजली की ले जानकारी,
पी.जी.आई **रोहतक** मैं बणरया, कटै सैं सबकी बिमारी,
खानपुर मैडिकल कॉलेज, डाक्टरी की हो सै तैयारी,
गोहाना की मशहुर जलेबी, **सोनीपत** की बात निराली,
खेल विद्यालय बण्या राई मैं, बच्चों का भविष्य बणाणा ।।

अंतरा–4
अग्रसेन का शहर अग्रोहा, देखण की तैयारी करले,
एयरपोर्ट **हिसार** जहाज मैं, बेठण की तैयारी करले,
स्टील सीटी हरियाणा की तूं, पुरी जानकारी करले,
टोहाणा की राजनीति, **फतेहाबाद** का धरले ध्यान,
देश की शक्ति बढ़ाता, गोरखपुर का पावर प्लांट,
एयरफोर्स स्टेशन से **सिरसा**, जिले की होरी पहचान,
ओटू आली झील मैं तनै, चाहूं सैर कराणा ।।

अंतरा–5
152–डी जैसी सड़कां का, आड़ै बिछरया जाल,
पेहवा, **रोहतक, चरखी–दादरी, नारनौल** पहुंचाऊ चाल,
जल महल, बिरबल का छत्ता, **महेन्द्रगढ़** की एक मिसाल,
भिवानी के मंदिर देख, **झज्जर** के तू गाँव खास,
बहादुरगढ़ और बादली तै देख के.एम.पी बाईपास,
पलवल, नूँह, मेवात मैं भी, होरया सै इब खूब विकास,
रेवाड़ी मैं पीतल के बर्तन, चांहू तनै दिखाणा ।।

अंतरा–6
गुरूग्राम गुरूओं की बस्ती, द्रोणाचार्य ऋशि का ज्ञान,
साईबर सीटी गुरूग्राम, हरियाणा का उद्योग महान,
शीतला माँ के दर्शन करले, माता का होरया गुणगान,
राजा नाहरसिहं पैलेस से, **फरीदाबाद** की है पहचान,
इस जिले के गाम सीही मैं, सूरदास का जन्मस्थान,
बड़खल झील सुरजकुंड मेला, हरियाणा की सुंदर शान
प्रदीप गुरू जी के आशीर्वाद तै, सौरव नै गाया गाणा ।।

कवि – सौरव अत्री, हरियाणवी लोक गायक एवं संस्कृति प्रचारक
1008–ए, सैक्टर–25, पंचकुला, 6280460371, 9646396508

बाजरा एक पौषक अनाज की फसल

भारत में मिलेट्स की श्रेणी में आने वाले मुख्य अनाजों में ज्वार, रागी, बाजरा, कुटकी, कोदो, कुटू और चौलाई आदि शामिल हैं। भारत में सालाना लगभग 1.7 करोड़ टन मोटे अनाजों का उत्पादन होता है। एक प्रकार के अनाजों को ही मिलेट कहा गया है लेकिन जब मिलेट की बात की जाती है तो बाजरा का ही नाम आता है क्योंकि बाजरा मिलेट में सबसे लोकप्रिय है। बाजरा हरियाणा राज्य की खरीफ की मुख्य फसलों में एक है। जिसकी बिजाई लगभग 4–5 लाख हेक्टेयर में होती है। हरियाणा राज्य के बारानी क्षेत्र विशेषतः भिवानी, चरखी दादरी, रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, जींद, रोहतक, झज्जर जिलो में बाजरा की खेती की जाती है।अनाज व चारे की पूर्ति की वजह से दोहरी उपयोगिता वाली फसल होने के कारण एवं सूखा सहन करने की क्षमता की वजह से शुष्क क्षेत्रों में बाजरा का विशेष महत्व है। बाजरा की हरियाणा राज्य में औसत उपज 15–20 मन प्रति एकड़ तक ही सीमित है जबकि अधिकतम उपज 55 मन प्रति एकड़ तक ली जा सकती है। इसका दाना, मक्के व ज्वार की अपेक्षा अधिक पौष्टिक होता है। इसमें 11–13 प्रतिशत प्रोटीन, 5–8 प्रतिशत वसा एवं 2–3 प्रतिशत खनिज पदार्थ पाए जाते हैं।

किस्में

विभिन्न प्राकृतिक अवस्थाओं को ध्यान में रखकर इस विश्वविद्यालय द्वारा बाजरे की संकर किस्में व संयुक्त किस्में विकसित की गई हैं जैसे सिंचित क्षेत्रों के लिए एच एच बी 299, एच एच बी 311, अर्धसिंचित क्षेत्रों के लिए एच एच बी 197, एच एच बी 223, बारानी क्षेत्रों के लिए एच एच बी 67(संशोधित), एच एच बी 226, एच एच बी 234, एच एच बी 272 व संयुक्त किस्में एच सी 10, एच सी 20 आदि।

बिजाई का समय व बीज की मात्रा

बाजरा की बिजाई का उचित समय 1–15 जुलाई है लेकिन असिंचित क्षेत्रों में मानसून की पहली वर्षा पर कर सकते हैं। मानसून के पहले भी यदि 50 मि.मी. से अधिक वर्षा हुई हो तो 10 जून के बाद भी इसकी बिजाई की जा सकती है। इस फसल में 1.5 से 2.0 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ काफी है ताकि खेत में लगभग 60–65 हजार पौधे प्रति एकड़ बारानी अवस्था में तथा 75–80 हजार पौधे सिंचित अवस्था में प्राप्त हो सकें।

बिजाई का तरीका

बिजाई कतारों में तथा कतार से कतार का फासला 45 सें. मी. रखकर इस प्रकार करें कि बीज 2.0 सें.मी. गहराई पर पड़े। फसल के अच्छे जमाव के लिये बिजाई ट्रैक्टर चालित रिजर सीडड्रिल या बैलों से चलने वाले विशेष देसी हल से मेढों की दोनों ओर पंक्तियों में करें। दोहरी पंक्तियों में कतार से कतार का फासला 30 सें.मी. रखें तथा बीच की दूरी 60 सें.मी. रखें। बीज के अच्छे जमाव के लिये मिट्टी में पर्याप्त नमी का होना जरूरी है। बीज को 100 मि. ली. बायोमिक्स प्रति एकड़ से उपचारित करना चाहिए। यदि बायोमिक्स का टीका उपलब्ध न हो तो बीज को ऐजोटोबेक्टर टीके से भी उपचारित किया जा सकता है।

बिरलन एवं खाली जगह भरना

बिजाई के लगभग तीन सप्ताह बाद किसी वर्षा वाले दिन बिरलन एवं रिक्त स्थानों की पूर्ति की जा सकती है। कतारों में जहां आवश्यकता से अधिक पौधे हों, उनको उखाड़कर रिक्त स्थानों पर इनकी रोपाई का कार्य किया जा सकता है। यह एक आवश्यक कार्य है। इससे खेत में पौधों की उचित संख्या बनाई जा सकती है जो अधिक पैदावार के लिए महत्वपूर्ण है।

खाद की मात्रा व देने का समय

बाजरा की फसल में बारानी क्षेत्रों में 16 कि.ग्रा. नत्रजन 8 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति एकड़ तथा सिंचित क्षेत्रों में 62.5 कि.ग्रा. नत्रजन 25 किग्रा फास्फोरस प्रति एकड़ की सिफारिश की गई है। बिजाई के समय आधी नत्रजन तथा पूरी फास्फोरस तथा शेष नत्रजन की मात्रा दो भागों में तीन सप्ताह तथा पांच सप्ताह बाद प्रयोग करें। उर्वरक की मात्रा मिट्टी परिक्षण के आधार पर प्रयोग करें।

खरपतवार नियंत्रण

बिजाई के 3 और 5 सप्ताह बाद निराई व गुडाई आवश्यक है जो कि खरपतवार नियंत्रण तो करती ही है साथ मे नमी संरक्षण के लिए भी बहुत उचित उपाय है तथा पौधों की जड़ो तक उचित मात्रा में हवा का भी आवागमन हो जाता

सत्यजीत, महक नागोरा एवं अक्षय पारीक 'क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, बावल'
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

श्री जे.सी. कंवर अतिरिक्त रजिस्ट्रार (सेवानिवृत) का निधन

श्री जीवन चन्द्र कवंर का जन्म 12 नवम्बर 1937 को गांव बांस जिला हिसार में जैलदार भरत सिंह के घर हुआ। उनकी पांचवीं तक की पढ़ाई गर्वनमैन्ट प्राथमिक स्कूल बांस, आंठवीं गर्वमैन्ट मिडल स्कूल नारनौंद व दसवीं जाट स्कूल हिसार में हुई। स्नातक (बी.ए.) बिरला कॉलेज पिलानी (राजस्थान) से पास की। सहकारिता से सम्बिधत डिपलौमा इन कॉपरेटिव भारत सरकार से मान्यता बम्बई से पास करने उपरान्त सी.बी. रोहतक में अकाउटैन्ट की नौकरी करी। सयुंक्त पंजाब में 1 नवम्बर 1957 को सहायक रजिस्ट्रार सहकारी समितियां (बैंकिंग) के पद पर ज्वाईन किया तथा 10 जनवरी 1967 तक इसी पद पर मुख्यालय में रहे। उप रजिस्ट्रार सहकारी समितियां के पद पर 11 जुलाई 1967 को पदोन्नत हुए। उप रजिस्ट्रार रोहतक व करनाल के पद पर कार्य किया। चीनी मिल पानीपत में 14 मई 1971 से 3 जनवरी 1972 तक डिप्टी जनरल मैनेजर के पद पर प्रतिनियुक्ति पर रहे। 4 जनवरी 1972 से सी.टी.आई. रोहतक में प्राधानाचार्य कई वर्ष तक रहे। अपर रजिस्ट्रार एच.एस.ए. आर.डी. बैंक के पद पर रहे। हरको बैंक के प्रबंध निदेशक 8 फरवरी 1979 से 11 अगस्त 1979 व 6 जुलाई 1987 से 30 नवम्बर 1989 तक रहे। 30 नवम्बर 1989 में सेवानिवृत हुए। 18 अप्रैल 2024 को Princeton Texus (USA) में अन्तिम सांस ली।

20 अप्रैल 2024 को Princeton Texus (USA) में सैकड़ों परिचित लोगों ने दांह संस्कार भाग लिया। अपनी पूरी नौकरी में लगन व निष्ठा से काम करते हुए विभाग का नाम रौशन किया। उनके बड़े भाई चौ0 युद्ववीर सिंह 1962 में महेन्द्रगढ़ लोकसभा से सासंद रह चुके है। कवंर साहब अपने पीछे खुशहाल परिवार पत्नी श्रीमती सरला, पुत्र अनील, शेखर पुत्री इन्दुरानी (पूना में) व पौते पौतियां छोड़ कर गए है। सहकारी समितियां के अधिकारी/कर्मचारी उनकी आत्मा की शान्ति प्रदान के लिए भगवान से प्रार्थना करते है।

महेन्द्र सिंह श्योराण उप रजिस्ट्रार (सेवानिवृत)
सहकारी समितियां हरियाणा कार्यालय मो0 94171–96605

है। खरपतवारों के रासायनिक नियंत्रण के लिए खरपतवार नाशक एट्राजिन (50 प्रतिशत घु.प.) 400 ग्राम प्रति एकड़ 250 लीटर पानी में मिलाकर बिजाई के समय छिड़के। यदि बिजाई के तुरन्त बाद एट्राजीन का प्रयोग न कर सकें तो बिजाई के बाद 10 से 15 दिन के बीच में भी उतनी ही मात्रा प्रयोग कर सकते हैं। छिड़काव करते समय खेत में उचित नमी होनी चाहिए।

सिंचाई प्रबन्धन

सिंचाई की संख्या वर्षा पर निर्भर करती है। अच्छी फसल लेने के लिए एक या दो सिंचाइयां काफी हैं। बाजरे की फसल पानी का ठहराव सहन नहीं कर सकती। भारी वर्षा के बाद फसल में वर्षा का पानी कुछ घंटों से अधिक नहीं ठहरने देना चाहिए। पलेवा खारे पानी से न करें। मेढों पर बाजरा की बिजाई करने से जल–निकास में सुविधा रहती है। फुटाव, फूल आना तथा बीज की दूधिया अवस्था में वर्षा न होने पर सिंचाई करना अत्यंत आवश्यक है तथा वर्षा आधारित क्षेत्रों में नमी संरक्षण के विभिन्न उपायों का प्रयोग करना बहुत जरूरी है।

बाजरा प्रसंस्करण

प्रसंस्करण गतिविधियों से बाजरा का मूल्य संवर्धन किया जा सकता है। प्रसंस्करण से फसल उत्पादों के पोषण मूल्य में भी बढ़ोतरी होती है।ग्रामीण क्षेत्र में बाजरा का उपयोग अत्यधिक रोटी, खिचड़ी इत्यादि बनाने में उपयोग में लाया जाता है। परन्तु इसके अन्य स्वादिष्ट व्यंजन भी बनाए जा सकते हैं जैसे की बाजरा केक, बाजरा मोठ चाट, बाजरे के बिस्कुट, शक्करपारे आदि। ग्रामीण महिलायें इसका प्रशिक्षण लेकर स्वंय का लघु व्यवसाय प्रारम्भ कर सकती हैं।

उत्पादन क्षमता

बाजरा की उत्पादन क्षमता 50–55 मन प्रति एकड़ तक पहुंच गई है लेकिन यह तभी संभव है जब किसान भाई उपरोक्त बातों का ध्यान रखेंगे।

COOPERATIVES HELP FARMERS IMPROVE THEIR LIVELIHOODS ON A SUSTAINABLE BASIS.

Ashi Sachdeva
Faculty
RICM 32/C Chandigarh

Cooperatives exist in all countries and sectors, including agriculture, food, finance, healthcare, marketing, insurance, and credit. A cooperative is a voluntary association of individuals who share common economic, social, and cultural goals through a cooperatively held business. A democratically controlled enterprise. Agriculture continues to drive economic growth in many developing countries. Cooperatives can help farmers overcome challenges, particularly in India, where 85% of farmers are small or marginal. "A cooperative is an autonomous group of people who come together freely to form a jointly-owned, democratically-controlled business to address their shared economic, social, and cultural needs and goals." Its network, which serves 85% of rural families, is founded on the principles of the growth of forestry, banking, finance, agro-processing, storage, marketing, dairy, fishing, and housing. With assistance for the utilization of resources and inputs, water resource harvesting, marketing channels, storage facilities, distribution routes, value addition, market information, and a regular monitoring network system, it has a crucial place in the growth of agriculture. Along with these commercial operations, cooperatives also provide agricultural supplies (seeds, fertilizers, and agrochemicals) and offer finance.

Cooperatives can help alleviate poverty, improve food security, and create jobs. It is said to have enormous. The capacity to provide products and services in locations where the governmental and commercial sectors have failed. Cooperatives have the ability to create self-employment possibilities at the grassroots level, thereby attracting people back to rural regions.

Since its official founding in India in 1904, the Indian Cooperative Movement has made significant contributions to the growth of the agricultural and rural sectors of the country's economy by fusing the strengths of the public and private sectors, particularly in aiding small and marginal farmers and underprivileged groups. The government acknowledged the cooperative sector as a third economic sector that would function as a counterbalance to the public and private sectors as soon as the country gained independence in 1947. In fact, the cooperative sector was regarded by the government as a "Cooperative Commonwealth." As a result, cooperatives evolved into a unique industry that combined the best elements of the public and private sectors to meet the needs of marginalized and small-scale farmers as well as weaker groups. It is currently the world's largest movement. solidarity, self-help, democracy, equality, and fairness are all beneficial traits in cooperatives, which are democratically run businesses with social goals that offer all the services its members require in accordance with the cooperative's tenets. Up to the eighth plan, cooperation was given a prominent place in the documentation of the

country's economic progress in the Five-Year Plan. The cooperative movement has accomplished a great deal in accordance with the guidelines established and the funds allotted, such as the establishment of dairy cooperatives, fertilizer cooperatives, the rural credit industry, improved livelihoods, and environmental upgrades.

Strategies for Improving Farmer Livelihoods

A livelihood is typically defined as any collection of economic activities that a household engages in to meet its basic needs and generate some cash income; when these activities are repeated, they tend to become a "way of life." In the informal sector, the majority of people work for themselves or receive wages; in a broader sense, a livelihood is made up of people, their abilities, and their means of subsistence, which include food, income, and assets; tangible assets include stores and income; intangible assets include claims and access; all of which should be sustainable in terms of both the environment and society.

The security of the rural impoverished farmers' livelihoods is a problem in India, where around 40% of the population lives in poverty. Since the majority of people living in rural areas rely on agriculture for a living, the best way to increase agricultural productivity is to actively include the weaker and impoverished segments of society.

Small and fragmented land holdings, heavy soil erosion, inefficient water use, outdated production technologies, lack of credit, and inadequate post-harvest infrastructure all contribute to lower yields and income.

Livestock is another source of income for small farmers. However, over 75% of the animals are uneconomical due to severe genetic erosion, inadequate feeding and health care. With lower crop and livestock productivity, the employment opportunities in the farming and other related sectors are reduced further, leading to reduction in farm wages, seasonal employment, malnutrition and migration.

Water is crucial for food production and quality of life. Neglecting water resources may negatively impact agricultural productivity, economic possibilities, and the availability of safe drinking water. Water scarcity causes unemployment, illness, and misery for women. Improving agricultural productivity can help break the vicious cycle.

The aforementioned issues must be resolved, especially in order to increase the agricultural yields of small and marginal farmers' low-productive non-irrigated lands, as this would increase their buying power. This necessitates the use of a value chain development strategy, in which small farmers are assisted in integrating backward and forward to increase productivity and add value to their output.

Despite having small holdings, poor soil quality, few resources, and limited access to modern technologies, small and marginal farmers as well as tribal families have flourished in food production thanks to numerous initiatives across the nation that have helped them create backward and forward links.

How Cooperatives Help to Enhance Livelihoods

Cooperatives, as the country's third economic sector, play a crucial role in improving rural livelihoods, particularly in agriculture, where the majority of the population relies on it.

Since its inception, the cooperative movement in India has been viewed less as a movement of the people and more as a result of government policy. All Indian villages,

however, and 75% of the country's rural populace are currently served by cooperatives. An estimated 5.45 lakh cooperatives with 2.36 crore members and Rs 34,000 crores in working capital are in operation. These cooperatives have significantly aided in the development of institutional infrastructure, the creation of private capital, the distribution of agricultural inputs, and the processing and marketing of produce—all essential elements of value chain development.

Cooperatives have been involved in land development, water resource management, agricultural machinery services, electricity distribution, labor supply, and other industries. Cooperative organizations offered a number of benefits, including simple access to administrative and financial assistance for the development of vital services and infrastructure needed to increase agricultural productivity and spread across larger areas.

Cooperatives such as Indian Farmers Fertiliser Cooperative Ltd (IFFCO), Krishak Bharti Cooperative Ltd (KRIBHCO), AMUL, and Indian Farm Forestry Development Cooperative Ltd (IFFDC) have made significant contributions to improving rural livelihoods.

भीषण गर्मी के लिए हम कितने तैयार ?

जेफ गुडेल आपको चेता नहीं रहे हैं, बल्कि वह चाहते हैं कि आपके पास जानकारी होनी चाहिए कि अब जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ कारवाई का समय आ गया है। उन्होंने जयपुर लिट्रेचर फेस्टिवल (जेएलएफ) 2024 में अमेरिकी दूतावास, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित जलवायु परिवर्तन पर केंद्रित ''स्कोर्च्ड अर्थ : लेसंस फ्रॉम नेचर'' सत्र में एक पैनलिस्ट के रूप में अपने विचार साझा किए।

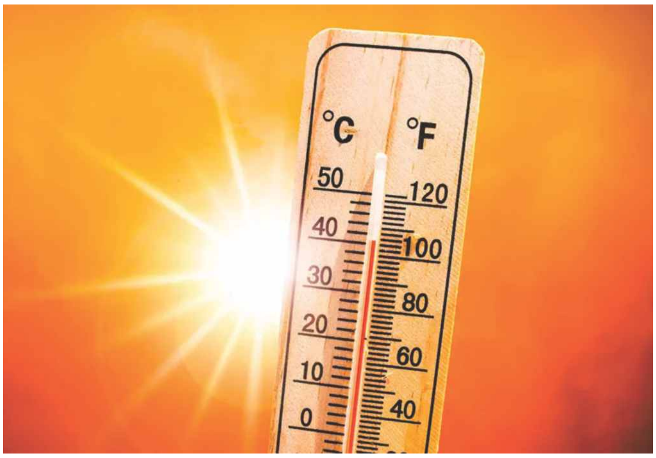

गुडेल की नवीनतम किताब ''द हीट विल किल यू'' है और उन्हें 25 वर्षों से पर्यावरण पत्रकारिता में अग्रणी माना जाता है। उनका कहना है, ''अभी हाल तक मैंने वास्तव में गर्मी के बारे में अधिक सोचा नहीं था। वास्तव में यह कहना बहुत अजीब लगता है क्योंकि हम सभी जानते हैं कि गर्मी कोई छिपी हुई घटना नहीं है।

जेएलएफ सत्र के दौरान गुडेल ने अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण क्षण साक्षा किया : फीनिक्स, एरिजोना में एक झुलसा देने वाले दिन उनकी कैब छूट और उन्हें एक मीटिंग के सिलसिले में लगभग 20 ब्लॉक दौड़ना पड़ा। गुडेल याद करते है कि '' 20 वें ब्लॉक के अंत में मेरे दिल की धड़कन तेज हो गई। मुझे चक्कर आ रहा था और मुझे अहसास हो चला था कि अगर मेरे दिल की धड़कन तेज हो गई। मुझे चक्कर आ रहा था और मुझे अहसास हो चला था कि अगर मुझे 20 ब्लॉक और जाना पड़ा तो मैं बड़ी मुसीबत में पड़ जाऊंगा। ऐसा पहली बार था कि जब मुझे यह अहसास हुआ कि गर्मी हमारे वातावरण में सिर्फ एक अमूर्त अवधारणा नहीं है बल्कि हकीकत में यह आपको बहुत जल्दी मार सकती है और वही क्षण मेरे लिए इस किताब का आरंभ था।''

सत्र के दौरान गुड़ेल ने कहा कि, अपनी किताब में वह इस बारे में बात करना चाहते थे कि ''कैसे अक्सर जलवायु परिवर्तन के बारे में कुछ ऐसा कहा जाता है जो सत्र के दौरान गुड़ेल ने कहा कि, अपनी किताब में वह इस बारे में बात करना चाहते थे कि ''कैसे अक्सर जलवायु परिवर्तन के बारे में कुछ ऐसा कहा जाता है जो दूर की बात है और भविष्य की पीढ़ियों

को प्रभावित कर रहा है। शायद हमसे अलग लोग, उनका रंग अलग है और वे कहीं दूरदराज की जगहों पर रहते हैं। मैं वास्तव में इसके बारे में गहराई से बात करना चाहता था, इस बात पर रोशनी डालनी चाहता था कि इसके तात्कालिक नतीजे कैसे हो सकते हैं। जैसे कि आप गलत दिन टहलने के लिए बाहर जाते हैं और आपको पता नहीं कि आपको क्या करना है''।

गुड़ेल का कहना है कि, जेएलएफ में बातजीत ताजा और भविष्योन्मुखी थी। उन्होंने बताया कि '' लोग तन्मयता से जुड़े हुए थे और कारवाई लायक समाधानों पर चर्चा करने के लिए उत्सुक थे। उत्सर्जन को घटाने, स्वच्छ ऊर्जा को अपनाने और 2030 तक नवीकरणीय स्त्रोतों से अपने खपत की आधी बिजली का उत्पादन और 2070 तक शुद्ध शून्य की भारत की प्रतिबद्धताएं, कि वे वास्वविक लक्ष्य हैं या नहीं, जैसे विषयों के साथ दूसरे मसलों पर भी खूब चर्चा हुई।''

गर्मी से निपटने की जरूरत

गुड़ेल कहते हैं, ''भारत उन जगहों में से एक है जहां अत्यधिक गर्मी के खतरे सबसे खतरनाक है। जब आप भविष्य के तापमान अनुमानों के बारे में सोचते हैं तो यह बहुत भीषण लू के थपेड़ों की वजह बन सकता है। यह बहुत घातक स्थिति होगी। इसीलिए जब आप भीषण गर्मी और तेजी से बढ़ती आबादी के बारे में सोचते हैं तो इस पैमान पर भारत बिल्कुल निशाने पर नजर आता है।''

गुडेल के अनुसार दूसरी ओर एयरकंडीशनिंग के अपने नुकसान हैं। उनका मानना है, '' हालांकि यह जीवन बचा सकता है और एक महत्वपूर्ण तकनीक है लेकिन इसके लिए अधिक ऊर्जा की भी जरूरत होती है। अगर ऊर्जा कोयले जैसे जीवाश्म से आती है तो यह उन्हें जलाने का चक्र जारी रखती है। एयरकंडीशनिंग ऊर्जा की भारी खपत करते हैं और हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (एचएफसी) का उपयोग करते है जो ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में योगदान करते है जो एक जलवायु परिर्वतन की प्राथमिक वजहों में से खासकर तब जब लू के तेज थपेड़े चल रहे होते हैं जिसकी वजह से दशक मौतों की तादाद बढ़ती जा रही हैं।

गुड़ेल के अनुसार, ''जैसे–जैसे गर्मी के हालात बद से बदतर की तरफ बढ़ेंगे, पश्चिम को भारत को स्वच्छ ऊर्जा के इस्तेमाल के लिए तेजी से मदद करने के लिए सभी संभव प्रयास करने की जरूरत होगी। घरों से शुरूआत करना बेहतर होगा और तेजी से बढ़ते शहरीकरण में हरे–भरे स्थानों को शामिल करने के लिए अलग तरह से सोचना होगा।''

गुडेल मानते हैं कि, प्राचीन भारतीय वास्तुकला इमारतों को ठंडा रखने के लिए वेंटिलेशन सिस्टम के बारे में बहुत कुछ सिखा सकती हैं। जेएलएफ के दौरान, जयपुर घूमते हुए गुडेल को ठंडा तापमान बनाए रखने के लिए आंगनों और पानी के फव्वारोंका उपयोग करने के लिए डिजाइन की गई प्राचीन संरचनाएं मिलीं। वह कहते हैं, '' पांच सौ साल पहले भारत में लोगों को अच्छी तरह से पता था कि उन्हें गर्मी से कैसे निपटना हैं और मुझे लगता हैं कि, इस ज्ञान में से ऐसी कुछ चीजों को वापस लाने ओर उन विचारों को फिर से तलाशने की जरूरत हैं जो प्राकृति रूपसे शीतलता प्रदान करते हैं।

आगरा में ताजमहल ओर जयपुर में हवामहल जैसे प्राचीन वास्तुशिल्प के चमत्कार इन इमारतों के भीतरी हिस्सों को ठंडा रखने के लिए वेंटिलेशन, रोशनी और हल्की हवा आने देने के लिए नक्काशीदार घुमाव में काटे हए पत्थरों का उपयोग किया जाता था जिसे जाली कहा जाता था।

गुडेल के अनुसार, जैसे–जैसे वैश्विक तापमान बढ़ता ळे, हआर्कटिक की बर्फ पिघलती है और गर्म पानी नए प्रकार के बैक्टीरिया के लिए प्रजनन स्थल बन जाता है। हमें बदलती जलवायु के अनुकूल होने के तरीकों के बारे में सोचना चाहिए, जो लोग लंबे समय तक धूप में रहते हैं या फिर अपने स्थान को ठंडा रखने का खर्च नहीं उठा सकते, व सफेद छत जैसे सस्ते समाधानों का उपयोग कर सकते हैं। इससे सूरज की गर्मी को विक्षपित किया जा सकता है। तेज गर्मी वाले दिनों में श्रमिकों को धूप में लंबे समय तक रहने से रोकने और साथ ही उनकी मजदूरी का भुगतान करने जैसे मानवीय उपाय जीवन और परिवारों का बचाने में मदद कर सकते है। गुड़ेल कहते हैं,''गर्मी से मौत के जोखिम को कम करने के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है जो बहुत खर्चीला भी नहीं हैं।''

बढ़ते तापमान के कारण बहुत तेज बारिश भी हो सकती हैं। गुड़ेल बताते है, ''अब यह सोचने का समय आ गया है कि तेज बारिश को झलने के लिए कैसे तैयारी की जाए और उसके अनुकूल कैसे ढ़ला जाए। इसका मतलब है तुफानी जल निकासी में बढ़ोतरी। सतह पर बहुत सारा कंक्रीट आ चुका है और प्राकृतिक रूप से पानी सोखने वाली मिट्टी की जगहें कम हो गई हैं। बहुत सारे देश स्पंज पार्क जैसी हरित जगहें विकसित कर रहे हैं जो बड़ी मात्रा में पानी को सोखते हैं।''

विश्व दुग्ध दिवस

विश्व दुग्ध दिवस, लोगों को उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए उनके शरीर पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों के बारे में जानकारी प्रदान करनके के लिए हर साल 1 जून को मनाया जाता है। दुध हर किसी के शरीर के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण तरल पदार्थ है जो उनके शरीर को मजबूत मांसपेशियों के साथ मजबूत बनाता है। यह लोगों को बेहतर स्वास्थ्य प्रदान करता है और किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इस बनाए रखता है। दुग्ध दिवस लोगों को लोगों के शरीर पर दूध के प्रभावों से अवगत कराता है। किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किसी भी प्रकार के कठिन और सरल बनाता है क्योंकि इसमें बहुत सारा कैल्शियम और कई अन्य महत्वपूर्ण पोषक तत्व होते हैं, और लोगों को अपनी फिटनेस के लिए सभी महत्वपूर्ण पोषक तत्व प्राप्त करने के लिए दूध में निहित कई पोषक तत्वों के साथ बेहतर भौतिकी की खेती करते। दूध सभी को उच्च मात्रा में कैल्शियम के साथ–साथ वसा के साथ प्रोटीन और कई अन्य महत्वपूर्ण पोषक तत्व प्रदान करता है।

जब लोग दिन में एक या दो गिलास दूध पीते हैं तो यह उनकी मांसपेसियों को बेहतर तरीके से विकसित करती है। दुग्ध उत्पाद लोगों की कमजोरियों और समस्याओं को दूर करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं और साथ ही वे अपने शरीर को उनके लिए आवश्यक रूप से विकसित कर सकते हैं। उचित स्वास्थ्य देखभाल गतिविधियों के साथ शरीर की देखभाल करना बहुत महत्वपूर्ण है। दूध पीने के लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए हर साल 1 जून को विश्व दुग्ध दिवस मनाया जाता है। यह संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा 2001 में इन दिन की स्थापना की गई थी। विश्व दुग्ध दिवस दूध के गुणों और महत्व को वैश्विक भोजन के रूप में स्वीकार करता है और मानवता को खिलाने के लिए डेयरी क्षेत्र की भावुक प्रतिबद्धता का जश्न मनाया है। यह वैश्विक उत्पादन और दूध के वितरण में चुनौतियों के बारे में जागरूकता फैलाने का भी दिन है।

विश्व दुग्ध दिवस इतिहास

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन ने 2001 में विश्व दुग्ध दिवस की शुरूआत की। थी चूंकि कई देश पहले दिवस (डब्ल्यूएमडी) को अभी तक संयुक्त राष्ट्र द्वारा एक आधिकारिक अंतरराष्ट्रीय दिवस के रूप में मान्यता नहीं दी गई है और इस तरह एफएओ मार्केट्स एंड ट्रेड डिवीजन वर्तमान में डब्ल्यूएमडी समारोहों के बारे में जानकारी प्राप्त करने और इसे डेयरी मार्केट नेटवर्क और ऑनलाइन के साथ साझा करने पर केंद्रित है। नेटवर्क दुनिया के डेयरी उद्योग में विकास पर सदस्यों के लिए एक मुफ्त

Sunil Kumar I Faculty Member RICM Chandigrh I E-mail : sunil.fastranking@gmail.com I M.No. 9357397549

सूचना–विनिमय मंच प्रदान करता है। विश्व दुग्ध दिवस पहली बार 2001 में मनाया गया था और दुनिया भर के कई देशों में मनाया गया था। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) ने स्थिरता, आर्थिक विकास, आजीविका और पोषक में डेयरी उद्योग के योगदान का सम्मान करने के लिए 2001 में 1 जून को विश्व दुग्ध दिवस के रूप में नामित किया। वास्वत में, इस आयोजन में भाग लेने वाले देशों की संख्या साल दर साल बढ़ती जा रही है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस दिन से संबधित कई गतिविधियों का आयोजन किया गया है। विश्व दुग्ध दिवस दूध के पोषण संबधी लाभों और आहार में इसके महत्व के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है।

क्यों मनाया जाता है ये दिन

विश्व दुग्ध दिवस 1 जून को वार्षिक आधार पर दुनिया भर के लोगों द्वारा मनाया जाता है। यह प्राकृतिक दूध के सभी पहलुओं जैसे इसकी प्राकृतिक उत्पत्ति, दूध पोषण मूल्य दूध पोषण मूल्य और दुनिया भर में इसके आर्थिक महत्व सहित विभिन्न दुग्ध उत्पादों के बारे में आम जन जागरूकता बढ़ाने के लिए मनाया जाता है। कई देशों (मलेशिया कोलंबिया, रामोनिया, जर्मनी, संयुक्त अरब अमीरात, संयुक्त राज्य अमेरिका और आदि) में विभिन्न उपभाकताओं और दुग्ध उद्योगों के कर्मचारियों की भागीदारी से इसे मनाना शुरू कर दिया गया है। विश्व दुग्ध दिवस के उत्सव के दौरान दूध को वैश्विक भोजन के रूप में केंद्रित किया जाता है। इंटरनेशनल डेयरी फेडरेशन द्वारा अपनी वेबसाइट पर विभिन्न प्रकार की प्रचार गतिविधियों (एक स्वस्थ और संतुलित आहार के रूप में दूध के महत्व का वर्णन) की शुरूआत की जाती है। पूरे दिन प्रचार गतिविधियों के माध्यम से आम जनमा को दूध के महत्व के संदेश की वितरित करने के लिए स्वास्थ्य संगठनों के विभिन्न सदस्य एक साथ काम करने के लिए उत्सव में भाग लेते हैं। विश्व दुग्ध दिवस समारोह ने बड़ी आबादी को दूध की वास्तविकता को समझने के लिए प्रभावित किया है। दूध शरीर के लिए आवश्यक सभी स्वस्थ पोषक तत्वों (कैल्शियम, मैग्नीशियम, जस्ता, फास्फोरस, आयोडीन, लोहा, पोटेशियम, फोलेट, विटामिन ए, विटामिन डी, राइबोफ्लेविन, विटामिन बी 12, प्रोटीन, स्वस्थ वसा और आदि) का एक बड़ा स्त्रोत है। बहुत ऊर्जावान आहार शरीर को तुरंत ऊर्जा प्रदान करता है क्योंकि इसमें आवश्यक और गैर–आवश्यक अमीनो एसिड और फैटी एसिड सहित उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन होते हैं।

क्या है इस दिन का महत्व

विश्व दुग्ध दिवस का प्रमुख लक्ष्य लोगों के जीवन में दूध के मूल्य के बारे में में जन जागरूकता बढ़ाना है। यह जन्म के बाद बच्चे द्वारा खाया जाने वाला पहला भोजन है और यह जीवन भर खाया जाने वाला एकमात्र भोजन हो सकता है। वास्वत में यह संसार में जन्म लेने वाले और पोषित होने वाले प्रत्येक जीव के लिए पहला भोजन है। नतीनतन यह हर जीव के लिए काफी जरूरी है। दूध में अधिकांश पोषक तत्व होते हैं जिनकी मानव शरीर को आवश्यकता होती है। स्थिरता, आर्थिक विकास, पोषण और आजीविका सभी डेयरी क्षेत्र द्वारा सहायता प्राप्त हैं। विश्व दुग्ध दिवस का प्रमुख लक्ष्य लोगों के जीवन में दूध के मूल्य के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। उत्सव का मुख्य एजेंडा दूध के महत्व के बारे में लोगों में जागरूकता लाना है। दूध हर नवजात शिशु का पहला आहार होता है। दूध हर उस पोषक तत्व का स्त्रोत है जिसकी शरीर को सबसे ज्यादा जरूरत होती है। नवजात शिशु के लिए मां का दूध सभी पोषक तत्वों और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली कोशिकाओं का सबसे अच्छा स्त्रोत है। दुनिया भर में लगभग 1 अरब लोग डेयरी क्षेत्र पर निर्भर हैं। विश्व दुग्ध दिवस को दुनिया भर में मानव आबादी के लिए दुध और डेयरी क्षेत्र के योगदान का जश्न मनाने के लिए मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन के अनुसार, यह दिन दूध की ओर ध्यान आकर्षित करने और दूधसे संबंधित घटनाओं और गतिविधियों को प्रचारित करने का अवसर प्रदान करता है। तथ्य यह है कि कई देशों ने एक ही दिन को चुना है, विशिष्ट राष्ट्रीय समारोह के महत्व को जोड़ता है और दर्शाता है कि दूध विश्व स्तर पर इस्तेमाल किया जाने वाला भोजन है।

वर्ल्ड मिल्क डे थीम

विश्व दुग्ध दिवस संगठन प्रतिवर्ष 1 जून के लिए एक नई थीम की घोषणा करता है। विश्व दुग्ध दिवस 2023 की थीम '' आनंद डेयरी '' है। संगठन अपने वार्षिक सोशल मीडिया अभियानों में लोगों की भागीदारी को प्रोत्साहित करता है। इस वर्ष के दुग्ध दिवस अभियान के लिए हैशटैग **# WorldMilkDay** और **#EnjoyDairy** हैं। पिछले साल विश्व दुग्ध दिवस 2022 की थीम थीम ''डेयरी नेट–जीरो'' थी। इस विषय ने जलवायु कार्रवाई में तेजी लाने और डेयरी उद्योग के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए प्रगति पर काम का प्रदर्शन किया।

धान

धान की रोपाई इस माह से शुरू कर दें। इसके लिए खेत के चारों ओर डोलों को मजबूत करें, खेत में अच्छी तरह पौध पनपने के लिए पानी बनाए रखने के लिए खेत की अच्छी तरह क....करके एकसार कर लें। यदि खेत में हरी खाद वाली फसल खड़ी हो तो जुताई करके पहले इसे दबा दें व फिर रोपाई करें। पौध को पंक्तियों में रोपें। लंबी किस्मों की रोपाई 20ग15 सैं.मी. की दूरी पर करें। बौनी किस्मों की व पछेती हालत में लंबी बढ़ने वाली किस्मों की रोपाई 15 सैं.मी. फासले की कतारों में व पौधों में भी 15 सैं. मी. की दूरी रखकर करें। ध्यान रखें कि पौध 2—3 सैं. मी. से अधिक गहरी न रोपें।

यदि पनीरी गारा किए खेत में लगाई जा रही है तो ऐसे खेतों में लगाने से पहले 20 कि.ग्रा. यूरिया और 60 कि.ग्रा. सुपरफास्फेट या 22 कि.ग्रा.डी.ए.पी. तथा 10 कि. ग्रा. जिंक सल्फेट प्रति एकड़ का छींटा लगाएं। 15 दिन की पनीरी होने पर 25 कि. ग्रा. यूरिया का छींटा देकर ऊपर से हल्का पानी लगाएं।

बौनी मध्यम अवधि वाली किस्में जैसे एच के आर 127, एच के आर 126 एच के आर 120, हरियाणा संकर धान 1, जया व पी आर 106 एवं मध्यम कम अवधि वाली किस्मों जैसे एच के आर 120, हरियाणा संकर धान 1, जया व पी आर 106 एवं मध्यम कम अवधि वाली किस्मों जैसे एच के आर 47, आई आर 64, एच के आर 46 में 130 कि.ग्रा. यूरिया, 150 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट, 40 कि. ग्रा. म्युरेट ऑफ पोटाश तथा 10 कि.ग्रा. ज़िंक सल्फेट प्रति एकड़ तथा ज़िंक फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की 1/3 मात्रा लेव बनाते समय शेश दो बार बराबर—बराबर मात्रा में रोपाई के 3 व 6 सप्ताह बाद दें। जबकि बौनी, कम अवधि वाली किस्मों, जैसे एच के आर 48 व गोबिन्द आदि में 105 कि.ग्रा. यूरिया, 150 कि.ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट, 40 कि.ग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश व ज़िंक सल्फेट की ऊपर बताई गई मात्रा प्रति एकड़ प्रयोग करें। नत्रजन की 1/3 मात्रा तथा फास्फोरस पोटाश व जिंक सल्फेट की पूरी मात्रा खेत तैयार करते समय प्रयो करें तथा 1/3 नत्रजन की मात्रा बिजाई के 21 दिन बाद व 1/3 मात्रा रोपाई के 42 दिन बाद प्रयोग करें। अगर खेत में ढ़ैंचे की हरी खाद लगाई गई हो तो ऊपर बताई गई नत्रजन की 1/3 मात्रा कम कर दें।

लंबी बासमती धान में 50 कि.ग्रा. यूरिया, 75 कि. ग्रा. सिंगल सुपर फास्फेट व 10 कि.ग्रा. ज़िंक सल्फेट प्रति एकड़ प्रयोग करें जबकि बौनी बासमती में 80 कि.ग्रा. यूरिया, 75 कि.ग्रा./ एकड़ सिंगल सुपर फास्फेट व 10 कि.ग्रा. ज़िंक सल्फेट प्रयोग करें। फास्फोरस व ज़िंक सल्फेट की पूरी मात्रा खेत तैयार करते समय प्रयोग करें। फास्फोरस व जिंक सल्फेट की पूरी मात्रा खेत तैयार करते समय प्रयोग करें। लंबी बासमती में नत्रजन की आधी मात्रा रोपाई के 21 दिन बाद व शेश आधी मात्रा 42 दिन बाद डालें। जबकि बौनी बासमती में 1/3 नत्रजन खेत की तैयारी करते समय, 1/3, 21 दिन बाद व 1/3, 42 दिन बाद प्रयोग करें। ध्यान रहे कि नत्रजन उर्वरक उस समय दें जब खेत में पानी खड़ा न हो।

खरपतवारों की प्रांरभ से ही रासायनिक ढ़ंब से रोकथाम के लिए पौध लगाने के 1–3 दिन बाद खड़े पानी में (4–5 सैं. मी. गहरा) प्रति एकड़ 12 कि.ग्रा. मचैटी दानेदार या बासालीन दानेदार सारे खेत में छिड़क दें या सैटर्न दानेदार केवल 6 किलोग्राम प्रति एकड़ के हिसाब से रोपाई के 2–3 दिन बाद खड़े पानी में एकसार बिखेर दें या ब्यूटाक्लोर 50 ईसी (मचैटी, डेल्क्लोर ई. सी. मिलक्लोर, नर्वदाक्लोर, कैप क्लोर, ट्रैप, तीर, हिल्टाक्लोर) या सैटर्न ई. सी. या स्टोम्प 30 ई.सी. में से किसी एक को प्रति एकड़ 1.2 लीटर के हिसाब से या अनिलोफॉस 30 ई.सी. (एरोजीन, अनिलोगार्ड, कन्ट्रोल एच) की 530 मिली. मात्रा या अनिलोफॉस 50 ई.सी. (अनिलोगार्ड) 325 मि.ली. या अनिलोफॉस 18 ई.सी. (रिको) 900 मिली. या प्रेटिलाक्लोर 50 ई.सी. (रिफिट इरेज) 800 मिली. या प्रेटिलाक्लोर 40 ई. डब्ल्यू (एरिजान) 1000 मिली. या प्रेटिलाक्लोर 6.0 प्रतिशत . पायरोजोसल्फयूरोन ईथाईल 0.15 प्रतिशत जी.आर. (इरोज 6.15 प्रतिशत घु.पा.) 50 ग्रा मात्रा प्रति एकड़ के हिसाब से 60 किग्रा. सूखी रेत में मिलाकर रोपाई के 2–3 दिन बाद खड़े पानी में छिड़क दें। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियन्त्रण हेतु मेटसल्फ्यूरोन. क्लोरीम्यूरान (एलमिक्स 20 घु. पा.) का 8 ग्राम तैयारशुदा मिश्रण. 0.2 प्रतिशत सरफेक्टेन्ट या ईथाक्सी सल्फ्यूरान (सनराईस 15 घु.दाने) 50 ग्राम या 2,4–डी एस्टर की 400 ग्राम (प्रोडेक्ट) का पौध रोपण के 20–25 दिन बाद 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें अथवा पिनोक्सुलास (ग्रेनाईट 25 प्रतिशत एस.सी.) की 37.5 मिली. मात्रा एकड़ के हिसाब से 120 लीटर पानी में मिलाकर पौध रोपाई के 8–12 दिन बाद छिड़काव करें। छिड़काव करने से एक दिन पहले व एक दिन बाद खेत में पानी खड़ा न हो। धान में मिले जुले खरपतावारों के लिए 100 मिली. बिस्पाइरी बैंक सोडियम (नोमिनी गोल्ड/तारक) 10 प्रतिशत एस एल या पिनोक्सुलम 2.5 प्रतिशत ओ.डी. (असर्ट 2.5 प्रतिशत ओ.डी.) 360 मि.ली. प्रति एकड़ या पिनाक्सुलम. सायहैलोफोप 6 प्रतिशत ओ.डी. (विवाया 6 प्रतिशत ओ. डी.) 900 मि.ली. प्रति एकड़ को 200 लीटर पानी में घोलकर पौध रोपण या सीधी बिजाई के 15–25 दिन बाद प्रति एकड़ के हिसाब से छिड़कें। छिड़काव करने से एक दिन पहले व एक दिन बाद खेत में पानी खड़ा न हो। ध्यान में रखें कि उपर्युक्त खरपतवारनाशकों में से केवल एक ही का प्रयोग एक बार ही करना होता है।

बीजजनित रोगों से बचाव के लिए बीजोपचार अवश्य करें। भारी व स्वस्थ बीज के चुनाव हेतु 10 प्रतिशत नमक के घोल (10 लीटर पानी में 1 कि.ग्रा. नमक) में बीज को थोड़ा–थोड़ा करके डालें। नीचे बैठे भारी बीज को साफ पानी में 3–4 बार धो लें ताकि बीज की सतह पर नमक का अंश न रहने पाए और फिर बीजगत फफूंद व जीवाणुओं के निवारण के लिए फफूंदनाशक उपचार करें। इसके लिए 10 लीटर पानी में 10 ग्राम कार्बेन्डाज़िम (बावस्टिन) व 2.5 ग्राम पौसामाईसिन या 1 ग्राम स्टैप्टोसाइक्लिन घोल लें और इस घोल में 8 कि.ग्रा. लंबी किस्मों के व 12 कि.ग्रा. बौनी किस्मों के बीज को 24 घण्टे तक भिगोकर उपचारित करें। धान की पनीरी को उखाडने से 7 दिन पहले कार्बेन्डाज़िम 1 ग्राम प्रति वर्गमीटर की दर से रेत में मिलाकर पनीरी में एक साथ बिखेर दें। ध्यान रहे पनीरी में उथला पानी हो। धान की पनीरी खड़े पानी में ही उखाड़ें। पौध शय्या में यदि पौध पीली पड़कर सफेद हो जाए तो 0. 5 प्रतिशत हरा कसीस या फैरस सल्फेट के घोल का छिड़काव करें। धान में जड़ की सूंड़ी की समस्या हो तो 10 कि.ग्रा. कार्बोफ्यूरान 3–जी प्रति एकड़ डालें। दवाई एक सार डालने के लिए इनमें यूरिया खाद मिला दें।

दिलचस्प कहानी

किसी मुंह ने किसी कान से कहा और उस कान ने उसे दूसरे कान से निकालने के बजाय फिर मुंह से निकाला, किसी और कान के लिए। यूं सिलसिला चलता गया और एक कहानी खड़ी हो गई। हिंदी में कहावत भी है इसके लिए, राई का पहाड़ बनाना। बातों का ऐसा चक्कर कभी खत्म नहीं होता और पहाड़ हर दिन बढ़ता ही जाता है। इसे ही कहते हैं गॉसिप या गपशप या चुगली करना। नाम कई हैं इसके लेकिन बिरले ही मिलेंगे, जो पक्ष में होंगे इसके। यहां तक कि गॉसिप करने वाले भी बुरा ही कहते हैं गॉसिप को। छोटे से बड़े तक सभी को एक ही सीख दी जाती है कि चुगली नहीं, दूसरों के बारे में बातें नहीं। ऐसे में यह सवाल पूछने के लिए भी बहुत हिम्मत जुटानी पड़ रही कि क्या गॉसिप में कोई अच्छाई नहीं है ?

कहा यही जाता है कि कोई भी चीज पूरी तरह खराब नहीं होती। फिर इस बात को गॉसिप पर क्यों न आजमाया जाए? गॉसिप के लिए सबसे जरूरी एलिमेंट है कम से कम दो लोगों की मौजूदगी। जब दो लोग होंगे, तभी बात आगे बढ़ेगी। तो एक तरह से गॉसिप काम करती है उन्हें और करीब लाती है। कहीं न कहीं इसका असर उनके काम पर भी दिखता है आपस में मिलकर काम भी बेहतर कर लेते हैं। इससे उन्हें यह पहचानने का भी मौका मिलता है कि किसके साथ वे ज्यादा कम्फर्टेबल हैं, किसके साथ वे थोड़ा वक्त बिता सकते हैं, कुछ कह–बोल सकते हैं। गॉसिप में कही गई बातों भरोसा नहीं होता, लेकिन इसमें शामिल लोगों को पूरा यकीन होता है एक–दूसरे पर। वे इस गपशप को बहुत संजीदगी से लेते हैं। फिर जब इसे बढ़ाते हैं, तो उसी गंभीरता के साथ ताकि आगे भी भरोसा बना रहे। गॉसिप का अगला फायदा है तनाव से मुक्ति। यह एक तरह का स्ट्रेस बस्टर है। आपने भी कभी न कभी किसी दूसरे के बारे में किसी दूसरे से कुछ न कुछ जरूर कहा होगा। याद करने की कोशिश कीजिए, उस वक्त कितनी राहत महसूस हुई थी दरअसल, मन में उठने वाली बातें ज्वारभाटे की तरह होती हैं। बातों की लहरों को बांधना मुश्किल है। हां, एक बार जब बात मुंह से निकल जाती है, तो भीतर की सारी हलचल शांत होती लगती है। रोजमर्रा के काम के तनाव और दबाव से छुटकारा मिल जाता है कुछ देर के लिए। कई लोग गॉसिप को 'राजनीति' समझने लगते है, लेकिन अंतर यह है कि राजनीति का वास्तविकता पर असर पड़ता है, गॉसिप का नहीं। यह तो गप है, जिससे किसी का कुछ बनना–बिगडना नहीं। गॉसिप बातें बनाना सिखाती है। लेखिका कमान्द कोजौरी का कहना है कि हम अपने बारे में ज्यादातर तब खुलासा करते है, जब दूसरों के बारे में बातें करते हैं। यू गॉसिप हमें मौका देती है खुलने का, मुखर बनने का। इसकी वजह से सहकर्मी और पड़ोसी दोस्त बन सकते है।

गॉसिप का एक और फायदा है, सतर्क बनाना। यह असर तो दोनों पक्षों पर छूटता है यानी गॉसिप करने वालों पर और जिनके बारे में गॉसिप की जा रही, उन पर। जो लोग गपशप करते हैं, वे इसलिए अलर्ट रहते हैं ताकि उनकी बातें पकड़ी न जाएं और जिनके बारे में गॉसिप की जा रही, उनके अलर्ट रहने का कारण है कि वे बातों के सिरे तक पहुंचना चाहते हैं। यह सोचना गलत है कि दूसरों के बारे में चर्चा करने वालों का अपना जीवन चर्चा लायक नहीं होता। यह तो गॉसिप का सुख है, जो उन्हें ऐसा करने पर मजबूर कर रहा। इस सबसे बीच यह जरूर याद रखना चाहिए कि गपशप और दूसरों की निंदा करने में अंतर है।

अगर आपको यह भनक लग जाए कि आपके बारे में लाग गॉसिप कर रहे, तो टेंशन लेने की बात नहीं। बातें उसी के बारे में की जाती हैं, जो उस लायक होता है। गॉसिप इस तरह से खास होने का अहसास भी करा सकती है। इस बारे में महान कवि ऑस्कर वाइल्ड का कहना था कि अगर दुनिया में लोगों के आपके बारे में बात करने से अधिक कष्टप्रद कोई चीज है, तो यह कि कोई आपके बारे में बात नहीं कर रहा।

–जनसत्ता से साभार

IFFCO
पूर्णतः सहकारी स्वामित्व
Wholly owned by Cooperatives
इफको नैनो यूरिया एवं
इफको नैनो डीएपी का वादा,
उपज अधिक और लाभ ज्यादा
500 मिली
₹600/- में
500 मिली
₹225/- में
NANO
DAP
Nano Di Ammonium Phosphate
LIQUID (8:16:0)
CROP NUTRITION REDEFINED
Seed Primer | Growth Enhancer | Yield Booster
Less Cost, More Profits
NANO
UREA
LIQUID (4% N w/v)
CROP NUTRITION REDEFINED
One Bottle is Equal to One Bag of Urea
Less Cost, More Profits
अधिक जानकारी के लिए निकटतम सहकारी समिति या इफको किसान सेवा केंद्र से सम्पर्क करें।
आज ही ऑर्डर करें : www.iffcobazar.in
आर्डर करने के लिए
स्कैन करें

डॉ. राजा सेखर वुंदरू, आई.ए.एस. माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव, सहकारिता विभाग, हरियाणा, दिनांक 02.05.2024 को होटल शिवालिकव्यू चण्डीगढ़ में पैक्स के आर्थिक विकास को गति देने व सुदृढ़ बनाने पर आयोजित की गई कार्यशाला में मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित रहे व उनके साथ मंच पर विराजमान डॉ. प्रफुल्ल रंजन, प्रबंध निदेशक/मुख्यकार्यकारी अधिकारी, हरको बैंक, सुश्री पूनम नारा व श्री वीरेन्द्र दहिया, अतिरिक्त रजिस्ट्रार, सहकारी समितियां, हरियाणा ।

डॉ. प्रफुल्ल रंजन,माननीय प्रबंध निदेशक/मुख्यकार्यकारी अधिकारी दिनांक 02.05.2024 को होटल शिवालिकव्यू चण्डीगढ़ में रजिस्ट्रार सहकारी समितियां हरियाणा,कार्यालय के अधिकारियों, राज्य के सभी सहायक रजिस्ट्रार, उप–रजिस्ट्रार सहकारी समितियां व जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों के महाप्रबंधकों को पैक्स के आर्थिक विकास को गति देने व सुदृढ़ बनाने पर आयोजित की गई कार्यशाला को सम्बोधित करते हुये ।

हरियाणा राज्य सहकारी विकास फैडरेशन की ओर से सौरव शर्मा संपादक द्वारा हरियाणा सहकारी प्रैस 165–166, इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–1, चण्डीगढ़ से मुद्रित व प्रकाशित तथा कार्यालय बेज नं. 49–52, प्रथम तल, सेक्टर–2, पंचकूला ।
दूरभाष : 0172–2560340, 2560332 हरकोप्रैस : 0172–2637264